.....क्योंकि हम हैं हिंदुस्तान

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात, पूर्ण मुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवा वशिष्यते

अर्थात वह जो दिखायी नहीं देता, अनंत और पूर्ण है। दृश्यमान जगत भी अनंत है और उसी अनंत से विश्व का उद्गम हुआ। इसलिए यह अनंत विश्व भी उस अनंत से निकलने की वजह से अनंत ही रह गया।

प्राचीन काल से ही भारत यानी हिंदुस्तान में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा और उसे वैज्ञानिक तथ्यों पर परखने की इच्छा प्रबल रही है। और इसकी सफलता सुनिश्चित रही हमारी सांस्कृतिक विरासत और उसकी एकता के स्वरूप को बनाये रखते हुए। अनंतकाल से हम अलग भाषा, अलग रंग और अलग संस्कृति का वहन करते हुए एकरूप रहे हैं। यही हमारी एकता हमें विकास और समृद्धि के पथ पर अग्रसर करती रही है।

क्योंकि हम हिंदुस्तान है, इसलिए हम भी इसी भावना पर काम करते हैं। हिंदुस्तान में, हिंदुस्तान की सोच के साथ और हिंदुस्तान के लोगों के लिए काम करने की इसी भावना को ब्रांडिंग की हमारी छवि परिलक्षित करती है। इसका डिजाइन केरल के कोल्लम आर्ट से प्रेरित है जो पंद्रहवी सदी से ही सांस्कृतिक एकता का प्रतीक रहा है। जहां विभिन्न भाषा, संस्कृति और रंगों के लोगों ने मिलकर कोल्लम को कारोबार की दृष्टि से उन्नति का केंद्र बनाया। अनंतता को परिभाषित करती यहां की कला में भी यही खासियत समाहित है।

इसी अनंतता में हम भी विश्वास करते हैं। विभिन्नता और विविधता के बीच एकरूपता के साथ हिंदुस्तान को आगे ले जाने की परिकल्पना। सबकी समृद्धि और सबका विकास। क्योंकि हमारा उद्भव भी यही है, क्योंकि हम हिंदुस्तान हैं।